दिनांक 12 नवम्बर, 1979 को ग्वालियर, मध्य प्रदेश की जनसभा में प्रधान मंत्री श्री चरण सिंह का उद्‌बोधनः

———————————

दोस्तों और बहनों,

मुझे अफसोस है कि मुझे आने में देर हो गई कोई एक घंटे। कुछ इसमें मेरी गलती है और कुछ हमारे जो प्रोग्राम बनाने वाले हैं, उनकी भी गलती है। मुझको यह मालूम हुआ है कि शायद साढे चार या पांच बजे का वक्त दे दिया गया। साढ़े चार या पांच बजे मैं यहां आ ही नहीं सकता था, किसी हिसाब से। खैर, मैं फिर माफी चाहता हूं कि आपका इतना समय नष्ट हुआ। आज अभी डेढ़ महीने के अन्दर जो देश की सबसे बड़ी पंचायत है, जिसका नाम लोकसभा है, उसका चुनाव होने वाला है। आपके सामने कई पार्टी के लोग आएंगे। इंदिरा जी कांग्रेस (इ) इनकी पार्टी इलेक्शन लड़ रही है और दूसरी लड़ रही है– जनता पार्टी। जनता पार्टी में जनसंघ और मोरारजी देसाई के साथ कांग्रेस वाले लोग शामिल हैं –– (शोर)

मैं जानना चाहता हूं, कि आप पढ़े–लिखे लोग हैं, आप सभा में विघ्न करने के लिए आए हैं, फिर नहीं आना चाहिए था आपको और अगर आप यहां विघ्न करेंगे, तो दूसरी जगह दूसरी पार्टी के लोग अपकी सभाओं को नहीं होने देंगे। (तालियां)

शरीफ घरों में पैदा हुए हो, शहर के रहने वाले हो, इस पार्टी के मेम्बर हो, अगर आप समझते हैं कि यहां मेरी सभा नहीं हो पाएगी, तो मैं आपको यकीन दिलाता हूं कि आपकी सभा भी कहीं नहीं हो पाएगी फिर (तालियां)।

मैं कोई बात कह भी नहीं पाया था– कि शरीफजादे खड़े हो गए। तो, मैं यह कह रहा था कि तीन पार्टियां आपके सामने बड़ी–बड़ी हैं, जो कि चुनाव के लिए खड़ी हैं। उनमें एक इंदिरा कांग्रेस है, दूसरी जनता पार्टी है, हमारे जगजीवनराम जी जिस पार्टी के लीडर हैं। तीसरी पार्टी उन कांग्रेस वालों की है, जिन्होंने इंदिरा कांग्रेस को छोड़ दिया था और लोकदल से इनका गठबन्धन है। ये वो पार्टी है, जिसकी तरफ से मैं आया हूं। मैं आपको ये मशविरा देने के लिए हाजिर हुआ हूं कि आप लोकदल के कैंडीडेट्स को वोट दें। सवाल यह होता है आपके मन में और होना चाहिए कि दूसरी पार्टियों को वोट न देकर केवल लोकदल और कांगेस के गठबंधन के उम्मीदवारों को ही क्यों राय दी जाए ? मैं आप लोगों को बताना चाहता हूं और मैं ये समझाने की कोशिश करूंगा कि हिन्दुस्तान के सामने जो समस्याएं हैं, उनका इलाज और समाधन केवल हमारे पास है और दूसरी पार्टियों के पास नहीं है।

आज देश के सामने चार बड़ी समस्याएं हैं। देश की गरीबी और गरीबी में बढ़ती हुई गरीबी। समय बीतता जाता है और हमारी गरीबी बढ़ती जाती है। दूसरी समस्या है बेरोजगारी की। बेरोजगारी भी समय के साथ बढ़ती जा रही है, बजाय कम होने के। तीसरी समस्या है गरीब और अमीर की आमदनी के फर्क की। ये फर्क या खाई, जो गरीब और अमीर आदमी के बीच थी या गांव और शहर के बीच थी, अंग्रेजों के जमाने में, वो बजाय घटने के या कम होने के और भी चौड़ी होती जा रही है। और चौथी समस्या है– करप्शन की, भ्रष्टाचार की। अंग्रेजों के जमाने में भ्रष्टाचार था। लोग यह स्वप्न देखा करते थे कि जब देश आजाद होगा, यह भ्रष्टाचार खत्म हो जाएगा। लेकिन नहीं, ये भ्रष्टाचार भी दिन–ब–दिन बढ़ता जा रहा है।

ये चार समस्याएं देश के सामने हैं। जहां तक मैंने गरीबी की बात आपको बतलाई, गरीबी का ये हाल है कि सन् 1964–65 में इंदिराजी ने जब कार्यभार सम्भाला, उससे एक साल पहले 140 देशों में हमारे देश का नम्बर 85वां था। 84 देश –– (शोर)––। कौन दल–बदलू है, तुम हो, अभी साबित करे देता हूं। अगर ईमानदार हो तो सुनना मेरी बात, सुनो चुप हो जाओ, दलबदलू तुम लोग हो। शर्म आनी चाहिए तुम सब लोगों को, मेरी बात सुनो! अगर जवाब देना है तो अपने लीडरों से जवाब दिलवाना, अगर हिम्मत है। बेईमान लोग!

तो मैं आपसे यह कह रहा था कि 85वां हमारे देश का नम्बर था, 84 देश हमसे मालदार थे। सन् 64–65 में और 40 देश हमसे गरीब थे, 125 देशों में। इसके आठ साल बाद, सन् 73 में हम और खिंच के नीचे आ गए, हमारा नम्बर 104 हुआ और हमसे मालदार देश 103 हो गए और केवल 21 देश हमसे गरीब रहे। जो सबसे ताजा आंकड़े मिलते हैं तीन साल बाद के सन् 1976 के, तो हमारा देश और तेजी से नीचे गिरा, 111 पर आ गया और 110 देश हमसे मालदार हुए। मतलब हुआ यह कि केवल 14 देश हमसे गरीब हुए। होती है गरीबी, हो सकती है, गरीबी है, गरीबी के कुछ कारण हैं, लेकिन सवाल ये है कि दूसरे देशों की अपेक्षा गरीबी बढ़ती जाती है, बजाय घटने के। अमरीका के वो देश जो सन् 48 और 50 में हमारे साथ आजाद हुए थे– ना तो सड़कें थीं, ना नहर थीं, ना बिजली थी ना अस्पताल थे, वो आज लगभग सभी हमसे आगे हो गए और हम सबसे पीछे रह गये। हमारे रेवन्यू कमीशन के अनुमान के अनुसार 48 फीसदी आदमी यहां गरीबी की रेखा से नीचे रहते हैं, बिलो दि पावर्टी लाइन जिसको अंग्रेजी में कहते हैं। उनको सूखा भोजन भी इतना नहीं मिलता है कि जिससे वो अपना स्वास्थ्य कायम रख सकें। दूध हमारे लिए दवा हो गया है, हमारे बच्चों के लिए। अंग्रेजों के जमाने में भी सब को दूध नहीं मिलता था और मैं समझता हूं कि आधे आदमी ऐसे हैं जिनको दूध नहीं मिलता है। बीमारी के समय में भी दूध हासिल करना मुश्किल हो जाता है।

दूसरी बात मैंने बेरोजगारी की बतलाई। तो शहर में भी और गांव में भी बेरोजगारी बढ़ती जाती है। जब जनता पार्टी ने चार्ज लिया मार्च सन् 77 में तो एक करोड़ 2 लाख 40 हजार लड़कों का नाम दर्ज था एम्पलायमेंट एक्सचेंजों कामदिलाऊ दफ्तरों में। सब रोजगार चाहते हैं, हाई स्कूल पास, बी0ए0 पास, एम0ए0 पास, इंजीनियरी पास, तरह–तरह की, साइंस की उनकी डिग्रियां हैं। इसमें कुछ बेपढ़े शहर के लोग भी हैं जो रोजगार चाहते हैं। जनता पार्टी के दो साल के राज के बाद अब एक करोड़ 35 लाख उन लोगों की संख्या है। मैंने इलाज बतलाया था,मंजूर कर लिया, लेकिन अमल करने के लिए कोई तैयार नहीं हुआ। ये मैं आपको बतलाने वाला हूं कि बेरोजगारी शहर के अंदर क्यों बढ़ती जाती है।

हमारे देश के लड़के बाहर पढ़ने के लिए जाते हैं – इंग्लैंड, जर्मनी और अमरीका में, वहां से वापस नहीं आते। यही नहीं, वो अपनी विद्या समाप्त कर लेते हैं, जब उनको रोजगार नहीं मिलता तो दूसरे देशों को चले जाते हैं रोजगार के लिए। एक अर्थशास्त्री ने ये हिसाब लगाया कि 65 किसान औसतन हिन्दुस्तान के साल भर में मेहनत करके जितना कमाते हैं – उतने रुपये गवर्नमेंट खर्च करती है एक ग्रेजुएट को पैदा करने में। एक आदमी के लिए बी0ए0 पास करने में जितना खर्चा आता है, उतना 65 किसानों की साल भर की आमदनी होती है। इस गरीब देश के लोग, इस गरीब देश के पैसों से विद्या पाकर, बजाय इसका विकास करने के, दूसरे जो मालदार देश है, उनके विकास में जाकर सहायक होते है। मैं उन

लड़कों को दोष नहीं देना चाहता हूं। हमारी राज–व्यवस्था ही गड़बड़ हो गई है, जिसकी वजह से रोजगार न मिलने के कारण हमारे नौजवान बाहर जाने को तैयार हो जाते हैं।

यह तो शहर की हालत है, जहां तक गांव की हालत है वहां लोगों का बड़ा ख्याल है कि हमने गांव वालों के लिए थोड़ा–सा किया था, टैक्स वगैरह उनका माफ किया था, उनका खाद पर टैक्स लगता था, वो आधा कर दिया था और हमने कुछ उनके लिए किया नहीं था। यहां ये जो आवाजें लगा रहे हैं, ये लोग और शहर के बड़े–बड़े अखबार ये लोग चलाते हैं। उन्होंने हमारे खिलाफ प्रचार ये किया कि हम लोग शहर के गरीब आदमियों पर टैक्स लगाकर गांव के मालदार आदमियों की मदद करना चाहते हैं। नहीं, ऐसी बात नहीं। दुनिया में कहीं खाद पर टैक्स नहीं लगता है। श्री मोरारजी देसाई ने सन् 1965 में खाद पर टैक्स लगा दिया था, तो केवल हमने आधा किया। और जब खाद नहीं मिलेगा किसान को, तो कोई भी तरकीब इस्तेमाल कर लो, खेत की पैदावार नहीं बढ़ेगी।

तो मैं आपसे कह ये रहा था कि 1970–71 में पहली दफा एग्रीकल्चर सेन्सस किया गवर्नमेंट आफ इंडिया ने कि कितनी जमीन कितने लोगों के पास है, कितने बड़े हैं, कितने छोटे हैं, कितनी फसल, कितने रकबों में होती है। कितने सिंचित तथा कितने असिंचित क्षेत्र हैं। इस सेन्सस के अनुसार, आपको सुनकर ताज्जुब होगा कि 34 फीसदी किसान ऐसे हैं जिनके पास दो बीघे से कम जमीन है। 18 फीसदी ऐसे किसान हैं जिनके पास दो बीघे से चार बीघे तक जमीन है। 19 फीसदी ऐसे किसान हैं, जिनके पास चार बीघे से आठ बीघे तक जमीन है। नाम के किसान हैं। उनकी गुजर नहीं हो सकती। वे लोग खाली बैठे रहते हैं। जमीन तो हमारे बाप–दादाओं से मिली है, जमीन तो बढ़ेगी नहीं। आबादी हमारी तेजी के साथ बढ़ रही है। सन् 1857 में जो पहला विद्रोह अंग्रेजों के खिलाफ हुआ था, तब़ हमारी जनसंख्या 18 करोड थी। आज बांगलादेश और पाकिस्तान को शामिल करके 85 करोड़ हो गयी है आबादी। पहले से चार–गुना, साढ़े चार–गुना आबादी बढ़ी और जमीन ज्यों की त्यों।

जमीन का उपजाऊपन तो बढ़ेगा नहीं, जो प्रकृति ने, इतिहास ने इस मुल्क को दिया, वही रहेगा तो गुजर करना ही करना है। मैंने आपको बताया कि 40 फीसदी किसान नाम के लिए किसान हैं, जिनके पास चार बीघे से कम जमीन है। ये गांव के लोगों का हाल है जो कि खाली बैठे हैं– अंडर एम्पलाएड या अनएम्पलाएड। बिलकुल बेरोजगार या देश का 24 घंटे नुकसान करने वाले, जिनका उदाहरण मिलता या नहीं मिलता है। इसके अलावा जो हमारे खेतिहर मजदूर हैं, अंग्रेजों के जमाने में उनकी संख्या 17 फीसदी थी बल्कि सन् 60 में भी 17 फीसदी थी। जब सीलिंग वगैरह लगी, जब इसका जिक्र हुआ तो जमींदारों ने किसानों से जमीन छीन ली। जिसकी जमीन छीनी, 5 एकड़ में से 4 एकड़ छीन ली, एक एकड़ छोड़ दी। चार एकड़ निकाल दी किसी की 5 एकड़ थी, वो पूरी छीन ली। नतीजा यह है कि 17 फीसदी की बजाय आज साढ़े छब्बीस फीसदी खेतिहर मजदूर हैं। साढ़े छब्बीस फीसदी, अपने देश की आबादी का –– (शोर)–– क्या बात है, साढ़े छब्बीस फीसदी साबित करेंगे, करेंगे या कम –– (शोर)– क्या मतलब है ईमानदार लोगों मैं जानना चाहता हूं। साढ़े छब्बीस फीसदी जो खेतिहर मजदूर और 51 फीसदी कल का किसान, तो आप बेरोजगारी का अंदाजा लगा सकते हैं कि बेरोजगारी किस कदर बढ़ती जाती है।

तीसरी बात जो मैं आप लोगों को बताना चाहता था, वो ये कि अंग्रेजों के जमाने में गरीबी–अमीरी का फर्क बढ़ता जा रहा था। शहर और गांव का फर्क बढ़ता जा रहा था। ये फर्क पैदा हो रहा था, जो पहले नहीं था।

तो हम ये स्वप्न देखा करते थे कि देश आजाद होगा– गरीब और अमीर, गांव और शहर के बीच जो चौड़ाई बढ़ी है, जो अन्तर आ गया, कम होगा। लेकिन ठीक उल्टा हो गया, दूना हो गया। एक किसान की आमदनी, सन् 50 में अगर 100 रू0 थी, तो गैर किसान या शहर में रहने वाले की आमदनी 178 रू0 थी। यह अनुपात एक और पौने दो का था। आज सन 76–77 के आंकड़े के अनुसार, अगर गांव वालों की आमदनी 100 रु0 है, तो खेती के अलावा दूसरा पेशा करने वाले जो शहर में रहते हैं, उनकी आमदनी 346 रु0 है। पहले फर्क हुआ, अनुपात हुआ एक का, फिर दो का, अब अनुपात है 100 और 350। तो गरीबी और अमीरी के बीच में जो फर्क था वो चौड़ा हुआ, दूना हुआ। यही नहीं, खेतों की तादाद बढ़ी और सेठों की सम्पत्ति भी बढ़ गई। आप लोगों ने टाटा, बिरला के नाम सुने होंगे? सबसे मालदार लोग अपने देश के अन्दर वो ही हैं। टाटा की जायदाद सन् 1950–51 में थी 116 करोड़ रु0 आज है 1100 करोड़ 30 जून 1978 में। बिरला की जायदाद थी 53 करोड़, यह टाटा से छोटा था, अब टाटा से आगे बढ़ गया है। 111 सौ करोड़ से भी ज्यादा। टाटा की जायदाद दोगुनी बढ़ी। बिरला की जायदाद 19 गुना बढ़ी। यही गरीबी–अमीरी का फर्क है।

चौथी बात, जहां तक मुल्क का सवाल है, तो जैसा मैंने कहा कि अंग्रेजों के जमाने में कुछ राज–कर्मचारियों में भ्रष्टाचार था। हम समझते थे कि देश गुलाम है इसलिए भ्रष्टाचार है। देश आजाद हो जाएगा, भ्रष्टाचार नहीं रहेगा। लेकिन ठीक उल्टा हुआ, राज–कर्मचारियों में भी भ्रष्टाचार बढ़ा और इस भ्रष्टाचार के बढ़ने का मुख्य कारण रहा कि कुछ जिम्मेदार लोगों में भ्रष्टाचार बढ़ गया। अगर मंत्री और जिम्मेदार लोग ईमानदार नहीं होंगे, अगर मुख्यमंत्री बेईमान होगा, मंत्री बेईमान होगा और हमारे सेंटर का कोई भी मंत्री बेईमान होगा, तो उस महकमें के लोग ईमानदार रह ही नहीं सकते, वो भी बेईमान हो जाएंगे।

तो राजनैतिक लोगों में उस वक्त कोई बेईमानी नहीं थी, उनको मौका भी कम मिलता था उनके पास रास्ता भी नहीं था। लेकिन फिर भी थोड़े–बहुतों के पास राजसत्ता थी या अंग्रेजों के पास राजसत्ता थी, उनमें कोई बेईमानी देखने को नहीं मिलती थी, सिर्फ हिन्दुस्तानी छोटे अफसरों में राज–कर्मचारियों में देखने को मिलती थी। आज मुश्किल से ईमानार आदमी दिखाई देता है देश के अन्दर! और जिस चीज की कमी होती है, उसी का जिक्र होता है। आज ईमानदार आदमी अंगुली पर गिने जाते हैं, इसका मतलब यह है कि ईमानदार कम हैं, बेईमानी ज्यादा हैं। दूसरे मुल्क के लोग सभाओं में बैठते हैं, बारों में बैठते हैं, चेम्बर्स आफ कामर्स में बैठते हैं, दस आदमी जहां बैठते हैं, खास जिक्र ये होता है कि फलां आदमी बेईमान है। यह बताता है कि आम लोग ईमानदार हैं। हमारे मुल्क में जिक्र होता है, फलां आदमी ईमानदार है, इसका मतलब है कि आम आदमी बेईमान है (शोर)। ये आपकी जो आवाज आयी है, वो बेईमानों का समर्थन करने के लिए आई है। इसी तरह बेईमानों का समर्थन करते हो तुम लोग।

तो मैं आपसे ये कह रहा हूं कि बेईमानी बढ़ती जा रही है। अब जिस देश में बेईमानी बढ़ जाए वो देश कभी तरक्की नहीं करेगा –– (शोर)–– तो क्या किया जाए ? इस तरह तो भाषण नहीं दे सकता हूं। मैं यही कह सकता हूं कि हम तुम्हारी सभा नहीं होने देंगे।

एक सहयोगी द्वाराः

चौधरी साहब का भाषण आज जिस तरह डिस्टर्ब किया जा रहा है, हम जनता के नौजवानों से कहना चाहते हैं कि अटल बिहारी वाजपेयी, राजमाता सिंधिया, शीतला सहाय, उनको हम सभा में घुसने नहीं देंगे। हां, हम घुसने नहीं देंगे। याद रखना भ्रष्टाचार का समर्थन करने वाले बेईमान लोगों, दुनिया में मुंह दिखाने लायक आप लोग नहीं हो। ईमानदार आदमी की आवाज दबाई नहीं जा सकती। और हम नौजवान आपका मुंह काला ––(नारे –– शोर ––)

श्री चरण सिंह : दोस्तों, दोस्तों, मैं एक बार और कोशिश करूंगा अपना भाषण जारी रखने की। लेकिन ये दोस्त ऐसा नहीं होने देते हैं, जो कि ऐसी पार्टी से वास्ता रखते हैं जो चरण सिंह में विश्वास नहीं रखती है। मेरे बार–बार मना करने पर भी ये नहीं मानते, तो मेरे साथी आपको हिन्दुस्तान में कहीं मीटिंग नहीं करने देंगे, मैं बताये देता हूं।

(जनता द्वारा : चौधरी चरण सिंह हाय ! हाय!!)

ये वो लोग हैं जो अकड़ रहे हैं नागपुर में। अगर नागपुर का आदमी कह दे कि बकरी का सींग टांग लो तो सभी लोग कहेंगे कि बकरी का सींग टांग रखा है। ये वो लोग हैं, ये लोग गुंडागर्दी में विचार करने वाले हैं। उनका ज्यादा खतरनाक यह कोई तरीका नहीं है। अगर चुनाव होना है इस देश में, तो सभा में आपको विघ्न नहीं डालना चाहिए। अगर आप डालेंगे तो दूसरा भी आपकी सभा में विघ्न डाल सकता है, तो फिर सभाएं नहीं होंगी। अपनी बात का प्रचार नहीं हो सकेगा। और वैसे तो आप प्रचार करना नहीं चाहते हैं अगर आपकी ताकत होगी दिल्ली में, तो आप कभी चुनाव कराएंगे हिन्दुस्तान के अन्दर, ये भी मुझे मालूम है। हमेशा के लिए आप चुनाव नहीं होने देंगे।

कानून ये है कि इलैक्शन की सभा में अगर कोई विघ्न डालेगा तो वो आदमी उस जुर्म का अपराधी है। वो अपराध करता है, उसका दोष है। अगर मैं चाहूं तो अभी पुलिस को हुक्म दिया जा सकता है आपको गिरफ्तार करने का लेकिन मैं आप पर अपनी ताकत का इस्तेमाल नहीं करना चाहता हूं, आपको बताता हूं बेईमान लोगों, अब मैं ––(शोर)––

सहयोगी सदस्य : जो लोग चौधरी साहब को नहीं सुनना चाहते, उनको लोकसेवादल के कार्यकर्ता, गांव के नौजवान ––

चौधरी साहब : दोस्तों, मैं यह कह रहा था कि हमारी चौथी समस्या है– हमारी आचरणहीनता और भ्रष्टाचार। हमारे देश के अन्दर रिश्वतखोरी बजाय कम होने के बढ़ती जा रही है और जिस देश में रिश्वतखोरी बढ़ जाएगी, राजनैतिक नेता और शासक लोग, प्रशासक लोग, ईमानदार नहीं होंगे, वहां गवर्नमेंट नहीं चलेगी––(शोर) –– इनकी पिटाई अच्छी तरह करा दो –– मुझे जाने दो !

दोस्तों, मैं यह कह रहा था, आप शांति से मेरी बात सुनने की कोशिश करें। और फिर भी मैं दरख्वास्त करूंगा कि जिन लोगों को मेरी बात पसंद नहीं है वो या तो खामोश रहें या फिर उठकर चले जाएं, लेकिन विघ्न न डालें। ये भले आदमियों का काम नहीं है। इस तरह मुल्क चल नहीं सकता है। हो सकता है, मेरी राय गलत हो, आपको नापसंद हो, लेकिन अगर आप सभा में आये हैं, तो आपकी जिम्मेदारी है कि आप खामोशी से उस बात को सुनें।

तो मैं यह कह रहा था कि गरीबी बढ़ती जाती है। बेरोजगारी बढ़ती जाती है। गरीब–अमीर का फर्क बढ़ता जाता है और –– और हमारे मुल्क में भ्रष्टाचार और रिश्वतखोरी बढ़ती जाती है। ये चार समस्याएं देश के सामने हैं। अब इनका क्या समाधान हो सकता है– इनका क्या हल हो? तो हमारे पास समाधान वही है जो कि महात्मा जी ने बताया था – महात्माजी का कहना ये था कि हिन्दुस्तान, असली हिन्दुस्तान या असली भारत गांवों में रहता है, बड़े शहरों में नहीं रहता, दिल्ली, बम्बई या कलकत्ते में नहीं रहता, गांव में रहता है और जो खेती करता है। तो जब तक खेती की पैदावार नहीं बढ़ेगी – ये देश मालदार नहीं होगा। लेकिन हमारे यहां जमीन बहुत कम हो गई है। तब, खेत की पैदावार बढ़ाने के लिए हमें उस पर सिंचाई का इंतजाम करना पड़ेगा, अच्छे बीज का इंतजाम करना पड़ेगा, अच्छे खाद का इंतजाम करना पड़ेगा। जब तक खेत की पैदावार नहीं बढ़ेगी, देश गरीब रहेगा, मालदार नहीं हो सकता। दुनिया में ऐसे देश हैं, जहां चार–गुना, आठ–गुना, दस–गुना तक पैदावार होती है, हमारे मुल्क के मुकाबले। हमारे मुल्क में पानी की कमी नहीं है। प्रकृति इतना पानी देती है, 50–60 सालों को छोड़ दो, लेकिन आम तौर पर हर साल बारिश जरूर होती है, लेकिन 90 फीसदी पानी समुद्र में बहकर पहुंच जाता है। हमारे यहां सूर्य की किरणें भी तेज पड़ती हैं, जिससे फसल पकती है। हमारी भूमि भी निहायत उपजाऊ है। फिर भी हमें अनाज बाहर से मंगाना पड़ा, गलत नीतियों के कारण। दूसरे लोग यह कहते हैं, बहुत से– कि मैं केवल किसानों की बात कहता हूं और शहर वालों के खिलाफ हूं। नहीं, हरगिज नहीं। मेरा अनुमान है, रीडिंग है, दुनिया का तजुर्बा यह है कि जब किसानों की, खेतों की पैदावार बढ़ती है, तब उसे बाजार में भेजते हैं, तब जाकर दुकानदारी चलती है। तभी मोटर चलती है। तभी उद्योग–धंधे बढ़ते हैं। किसानों के खेतों की पैदावार घट जाएगी तो सब बर्बाद हो जाएंगे।

शहर का मतलब क्या है ? वो लोग गैर–खेती पेशा करते हैं– खेती के अलावा जो दूसरा पेशा करते हैं, वो आम तौर से शहरों में, कस्बों में रहते हैं। जो खेती का पेशा करते हैं, वो गांव में रहते हैं। अगर किसान की पैदावार मान लो दूनी हो जाए– हमारे देश की, तो दुकानदार दूने हो जाएंगे, यहां ट्रांसपोर्ट दूनी हो जाएगी। छोटे–बड़े कारखाने दूने लग जाएंगे। तब दूसरा पेशा करने वालों की तादात भी बढ़ेगी और देश मालदार हो जाएगा। इसलिए मैं किसान की बात करता हूं। किसान, जब उसके खेत की पैदावार बढ़ी, उसके पास पैसा आया तो जरूरत का सामान खरीदा जाएगा। तब कारखाने लगेंगे, तब मशीनें लगेंगी, उस चीज को पैदा करने के लिए। साबुन है, कपड़ा है, जूता है, दियासलाई है, साइकिल है, घड़ी है। अगर उसका बच्चा पढ़ता है तो उसकी किताब का खर्च है, उसकी फीस का खर्च है, तब जाकर स्कूल और कॉलेज चलते हैं। जहां किसानों की हालत अच्छी रहती है, वो अपने स्कूल और कॉलेज खूब खोल लेते हैं। तो ये जो ग्वालियर आबाद है और तरक्की कर रहा है, तो उसी आधार पर तरक्की करेगा, जब आसपास के किसानों की हालत अच्छी होगी। अगर आसपास के किसानों की हालत खराब हो जाए तो बर्बाद हो जाएगा ग्वालियर, दस साल के अन्दर उजड़ जाएगा। आप कहीं जाकर देखो, वहीं कस्बे आबाद हैं, वहीं मुल्क की रौनक हैं, नई–नई इमारतें बन रही हैं, नये स्कूल और कालेज बन रहे हैं, वहीं सड़कें बन रही हैं, जहां आसपास के किसानों की हालत अच्छी है। तो इसलिए खेत की पैदावार बढ़नी चाहिए। इसके बिना देश मालदार नहीं हो सकता।

दोस्तों, जहां मैं आपसे यह कह रहा हूं कि खेतों की पैदावार बढ़ाओ, दूसरी बात इसके साथ यह कहना चाहता हूं कि खेतों पर काम करने वाले लोगों की तादाद घटनी चाहिए। खेत पर काम करने वालों की तादाद घटे और नान–एग्रीकल्चर आक्यूपेशन, खेती करने के अलावा दूसरा पेशा करने वालों की तादाद बढ़े। जितना किसानों की तादाद घटेगी, दूसरा पेशा करने वालों की तादाद बढ़ेगी, मुल्क मालदार होगा। लेकिन दूसरे पेशे तभी बढ़ेंगे जबकि पहले खेत की पैदावार बढ़े। आज अमेरिका में 100 में से 4 आदमी खेती करते हैं, ताज्जुब होगा आपको सुनकर कि यह मुल्क जब अंग्रेज आये थे, हमारे 100 में से 60 आदमी खेती करते थे, आज 72 आदमी खेती करते हैं। 25 फीसदी आदमी दस्तकारी या उद्योग धंधों में लगे हुए थे। आजकल केवल 10 फीसदी रह गये हैं। तो जब अंग्रेज आये थे, उस वक्त हमारा देश मालदार था– मुकाबले आज के। यह ठीक है, दिल्ली में और बम्बई में गगनचुम्बी इमारतें हो गई हैं, लाखों के पास मोटरकार हो गई हैं, टेलीविजन हो गया है, फ्रिज हो गया है, रेडियों हो गया है। फिर भी औसतन 8 हिन्दुतानी गरीब है, मुकाबले 200 बरस के जब अंग्रेज आया था। क्यों? क्योंकि किसानों की तादाद बढ़ी और गैर–किसानों की तादाद घटी। 1961 की अगर आप सेन्सस की रिपोर्ट उठाकर पढ़ें तो नाम ऐसे मिलेंगे उसमें कि मानो किसी गांव में एक रामलाल, बाप का नाम हीरालाल, काम कुम्हार, पेशा खेती। नाम अब्दुल्ला बाप का नाम मोहदुल्ला, काम जुलाहा पेशा खेती। ये दोनों चीजें बता रही हैं कि उनके बाप–दादा खेती नहीं करते थे। एक कपड़ा बुनने का काम करता था तो दूसरा बर्तन बनाने का। लेकिन जब अंग्रेजों ने अपने कारखाने चलाने के लिए हमारी दस्तकारी को नष्ट कर दिया, अपनी पॉलिटिकल ताकत के जरिये। तब हमारे दस्तकारों ने मजबूर होकर हल में अपने आपको जोत दिया, जिससे किसानों की तादाद बढ़ गयी और मुल्क गरीब हो गया।

दूसरी बात मैं यह कहना चाहता था कि खेत की पैदावार बढ़ाने के अलावा बड़े कारखाने कम लगाओ। जो काम छोटे पैमाने पर हो सकता है वो छोटे पैमाने पर करो। जो केवल बड़े पैमाने पर हो सकता है, उसे बेशक बड़े पर करो। मैं इसके खिलाफ नहीं हूं। अगर कोई बड़ा कारखाना बिजली से चलता है, बिजली जरूर इस्तेमाल करो, लेकिन उस तरह की बात होनी चाहिए कि बेरोजगारी न बढ़े, बल्कि ज्यादा लड़कों को रोजगार मिले। उनका कहना ये था कि हवाई जहाज, तोप का सामान, टैंक, गोला–बारूद है और बिजली है, फौलाद है, रेल का इंजन है, मोटर–कारें, बेशक बड़े कारखाने में बनें। लेकिन कपड़ा है, हाथ से बनता है, हमारे मुल्क में किसान खेती भी करता था और खाली वक्त में कपड़ा भी बनाता था। ढाका की मलमल दुनिया में मशहूर थी। हमारे यहां का कपड़ा इतना अच्छा बनता था कि जब अंग्रेज आया था, इंगलिस्तान के मुल्क में बिकता था। अंग्रेज लोग अपने यहां के बने हुए कपड़ों के मुकाबले हिंदुस्तान के हाथ के बने कपड़ों को खरीदते थे। तब 50 फीसदी टैक्स लगा। हिंदुस्तान का कपड़ा इंगलिस्तान में आएगा, उस पर 50 फीसदी ड्यूटी लगेगी। फिर भी पहनना नहीं छोड़ा। 50 फीसदी ड्यूटी लगेगी। भारत में अंग्रेजी राज जो लार्ड हार्डिंग ने डाला था, उसमें शामिल था। अभी हाल ही में ''भारत में अंग्रेजी राज'' किताब जिसे अंग्रेजों ने जब्त कर लिया था, उसमें लिखा है कि मालदार अंग्रेज खानदानों ने 80 फीसदी टैक्स हिंदुस्तानी कपड़ों पर लगाने के बाद भी हिंदुस्तानी कपड़ों को पहनना नहीं छोड़ा है। 1817 में ब्रिटिश पार्लियामेंट ने यह कानून बनाया कि हिंदुस्तान के हाथ से बने कपड़े जो पहनेगा, तीन महीने की सजा मिलेगी। इस तरह हमारे कपड़े के धंधे को खत्म कर दिया।

बम्बई से दिल्ली, मद्रास से दिल्ली, कलकत्ता से दिल्ली आने–जाने के लिए रेलगाड़ियां थीं, रेलवे ट्रेन बनीं। आप सोचते हैं कि अंग्रेजों ने हमारे फायदे के लिए बनाई थीं, नहीं, इसलिए बनाई थी ताकि उनके कारखानों का सामान हिंदुस्तान के कोने–कोने में पहुंच जाए और उसकी बिक्री हो। उन्होंने हमारी दस्तकारी खत्म कर दी और जो थोड़ी–बहुत दस्तकारी बची थी, वो हमारे लीडर नीलाम करते रहे। बड़े–बड़े कारखानों को प्रोत्साहन दिया गया। महात्मा चरखा लेकर क्यों बैठे– क्यों चरखा लेकर बैठे ? वो तो एक बड़े घर में पैदा हुए थे, एक राजा के दीवान के यहां। गरीब क्योंकर थे ? फिर भी हमको यह सिखाना चाहते थे कि दूसरे देशों की नकल करने के लिए गैर–जरूरी तौर पर बड़े कारखाने मत लगाओ, अमेरिका से नकल नहीं कर सकता है हिंदुस्तान। उनके एक आदमी के पास हिंदुस्तानियों के मुकाबले नौ गुना जमीन है, इसलिए उनके पास लोहा ज्यादा है, सोना ज्यादा है, तेल ज्यादा है, इसलिए वहां बडे कारखाने लगेंगे, क्योंकि आदमी कम हैं। 64 करोड़ 65 करोड़ की आबादी में वर्किंग सोर्स काम करने वाले हमारे यहां जो लोग हैं उनकी तादाद तिहाई है। डेढ़ करोड़ आबादी हर साल बढ़ती है। डेढ़ करोड़ कुल आबादी है आस्ट्रेलिया की, वह हमारे यहां एक साल में बढ़ जाती है।

50 लाख लड़के हमारे यहां 15–16 वर्ष की उम्र के हो जाते हैं, अर्थात् जब इतने वर्ष की मेहनत के बाद बड़े कारखाने लगे तो मैं जानना चाहता हूं 50 लाख लड़कों को कैसे रोजगार मिल जाएगा? नहीं मिलेगा, नहीं मिल सकता। हमारे अंग्रेजी पढ़े–लिखे लोग, हमारे अंग्रेजी पढ़े–लिखे लीडर हैं बहुत से, वो आकर्षित होंगे, बड़ी मशीनें लगाने में, ठीक है बड़ी मशीन चलेगी, तब जब आबादी कम होगी, आदमी कम होंगे। लेकिन हम ये कहते हैं कि बड़ी मशीन को इस्तेमाल करना निहायत गलती होगी, निहायत गलती।

हमारे दोस्तों ने, हमारे कांग्रेस के कुछ दोस्तों ने ये समझा कि मशीन लगाना उन्नति का द्योतक है, विकास का द्योतक है। हाथ से काम करना पिछड़ेपन का द्योतक है। लेकिन दोस्तों, जब हाथ खाली खड़े हैं, वहां मशीन लगाना बेवकूफी की बात है। महात्मा के सामने जो लोग चरखा कातते थे, उन्होंने 300–400 कपड़ा बनाने के कारखाने बना दिए और 10 लाख आदमी इन कारखानों में लगा – स्त्रीलिंग और पुल्लिंग मिलाकर, सूत कातने वाली और कपड़ा बुनने वाली, मुझे खुद नहीं मालूम है, शायद 6 लाख लगे हुए हैं कपड़ा बुनने वाले और 4 लाख या तीन लाख लगे हुए हैं सूत बनाने वाले।

अपनी गवर्नमेंट की कमेटी की रिपोर्ट सन् 1953 में जो आई थी, उसमें उन्होंने ये हिसाब लगाया था कि बड़े कारखाने में एक मजदूर जितना कपड़ा पैदा करता है, वो 12 करघों पर पैदा होता है। 12 आदमी करघों पर काम करें, तब जाकर इतना कपड़ा पैदा होता है। तो मैं और मेरे साथी इस पर राजी हो गए कि बड़े कारखानों को हम बंद नहीं करना चाहेंगे। ना गौरमेंट उनको खत्म करना चाहती है, लेकिन हम तुम्हारी मदद करेंगे, तुम हिंदुस्तान से बाहर अपना कपड़ा दे दो। लेकिन हिंदुस्तान में हाथ से बना कपड़ा बिकेगा। जिसका मतलब ये हुआ कि अगर 7 लाख आदमी कपड़ा बना रहे हैं, जो हिंदुस्तान में बिक रहा है, तो 84 लाख आदमियों को काम मिल जाएगा, बिना गौरमेंट के कुछ करे–धरे। उनको रोजगार मिल जायेगा, जो मारे–मारे फिरते हैं, जिनके पास दो बीघे जमीन है, जिनके पास तीन बीघे जमीन है, जो हाई स्कूल पास करके भी चपरासी गीरी करना पसंद करते हैं, जिनको नौकरी नहीं मिलती।

तो मैं आपसे यह कह रहा था कि यह दो चीज महात्मा कहता था, ये आप सब को पता है। दो–तीन दिन में ये चुनाव का मामला छंट जाए, मैं ज्यादा समय आपका लेना नहीं चाहता, तो ये दो बात हुईं – खेत की पैदावार बढ़ाने पर जोर हो, गौरमेंट कहती है अन्न अमेरिका से क्यों लाना पड़े। अंग्रेज जब थे तो साढ़े सत्रह बीघे में सौ फीसदी निकासी का इंतजाम था। आज 24–25 है, 30 साल के अन्दर, सूखा पड़ गया देश में, पेरशान हैं लोग। पांच–सात सूबों में पड़ा है, पंजाब में भी पड़ा है, लेकिन पंजाब की गौरमेंट इतनी अच्छी थी, किसान नेता सरकार में पहुंच गये, तो 80 फीसदी रकबे में सिंचाई का इंतजाम है पंजाब में। गांव को किसानों को कोई तकलीफ नहीं है। जहां तक मुझे मालूम है, आपके सूबे में किसानों की तरफ ध्यान नहीं दिया गया। 8 फीसदी रकबे में सिंचाई का इंतजाम हुआ, 8 फीसदी में। बाकी जमीन में कोई सिंचाई का इंतजाम नहीं। अगर सूखा पड़ा तो अन्न कोई कमी नहीं। अन्न आपको मिलेगा, जितना गौरमेंट चाहेगी। जो लोग खाली बैठे हैं, काम करने पर अन्न मिलेगा, बजाय रुपए के। और जो लोग, गरीब हैं, बीमार हैं, विधवा हैं, उनकी कोई सहायता करेने वाला नहीं है, बूढ़े आदमी हैं और सहायता करने वाला घर में कोई नहीं है। विधवा है, काम नहीं कर सकती है। उनके लिए हमने तय किया कि उन्हें मुफ्त पैसा मिलेगा, जो दिल्ली से आप लोग मांगेंगे।

लेकिन ईमानदारी ये हो रही है कि मध्य प्रदेश में जनसंघ की, जो गौरमेंट है, वो यह प्रचार कर रही है कि केन्द्र की गौरमेंट अन्न नहीं देती है, उनकी मदद नहीं करती। मैं कहता हूं ये सरासर गलत बात है। मैंने पूछा आप ऐसा कहते हैं ? तो अखबार वालों से ये लोग खुद कहते हैं कि केन्द्र की गौरमेंट हमारी मदद नहीं करती है। मदद कर सकती है हमारी गौरमेंट, तो क्यूं नहीं कर रही। ये फर्क पड़ता है कि एक आदमी ग्वालियर में पैदा हुआ और दूसरा आगरे में पैदा हुआ है। इनके लिए फर्क पड़ता होगा, लेकिन मेरे लिए नहीं पड़ता, मेरे लिए सारे हिंदुस्तानी, सारे हिन्दू और मुसलमान एक हैं।

पानी ऐसी समस्या है जिसके लिए हम परेशान हैं और हमारी समझ नहीं आता कि क्या किया जाए। अभी 9 तारीख को हमने बुलाया था, रिलीफ कमिश्नर को। मैंने उनसे कहा कि किस तरह की सहायता चाहते हैं, जो दे सकते हैं, हम दिल्ली से और नहीं देना चाहते। उन्होंने कहा हमें कोई शिकायत नहीं। पथरीली जमीन है जिससे सिंक के जरिये पानी निकाला जा सकता है। उनसे हमने कहा था कि जो सेवाएं गौरमेंट चाहती है उनको दो, लेकिन गौरमेंट कहती है सिंक के जरिये पथरीली जमीन से पानी नहीं निकाल सकते। तो हमने दूसरे देशों में कहलवाया कि हमारी मदद करो, लेकिन इसमें छह महीने से नौ महीने लग सकते थे, यह हमारी मुश्किल है।

बीज भी हमारे देश में अच्छे नहीं हैं, वो भी दूसरे देशों से मंगाने को कहा। मैं आपसे फिर कहता हूं कि अन्न की कोई कमी नहीं है। अन्न ठेकेदारों के पास जमा हो जाता है। यही बिहार में हो रहा है, यही मध्य प्रदेश में हो रहा है। हम यह चाहते हैं, तहसीलदार और नायब तहसीलदार की निगरानी में काम हो। अन्न उनके सामने बांटा जाए, ना कि ठेकेदार के आगे जो कि फूड कारपोरेशन के बेईमान छोटे अफसरों से मिलकर रिश्वत ले लें और उस अन्न को खा जाएं।

तो दोस्तों, महारानी सिंधिया, मैं उनकी बड़ी इज्जत करता हूं, बड़ी अच्छी महिला हैं। मैंने कहा कि मैं उनकी जाती तौर पर बहुत इज्जत करता हूं, लेकिन आज मैंने अखबार में

पढ़ा, कल उन्होंने तकरीर में यह कहा कि चरण सिंह ने जनता पार्टी को तोड़ा। नहीं, हमको निकाला गया है, किसने निकाला ? ये जनता पार्टी बनाई किसने थी ? पहले मैं ये जानना चाहता हूं। ये मेरी और मेरे दोस्तों की कोशिश का नतीजा था। सन् 74 में लोगों ने कहा कि 30 साल से कांग्रेस का राज और एक ही पार्टी का राज चलता रहा, निरन्तर, तो ऐसे जनतंत्र कायम नहीं होगा, पंचायती राज कामयाब नहीं होगा। कोई बराबर की पार्टी होनी चाहिए देश में। पांच साल का उनका तजुर्बा होगा। अगर बात नहीं चली तो कहूंगा कि दूसरी पार्टी को बुला लो। दूसरी पार्टी को देख लो पांच साल, दस साल, फिर दूसरी को बुला लो। लेकिन तीस साल से जब एक पार्टी चली आती है तो उसके मेम्बर भ्रष्ट हो जाते हैं और वे समझते हैं कि बईमानी के रास्ते पर चलो, हमें निकालने की किसी में बिसात नहीं है। इसलिए देश बर्बाद हो रहा है।

सभी पार्टियां मिल गयीं, इसलिए हमने बी0के0डी0 का बना दिया– भारतीय लोकदल। बजाय भारतीय क्रांतिदल के। और छोटी सोशलिस्ट पार्टियां हैं, जिनके लीडर–लीडर हैं, जनता में उनका कुछ है नहीं। और तीसरा मोरारजी भाई का कांग्रेस संगठन। मैं तीनों पार्टियों से मिला, कई–कई बार गया, मेरे दोस्त मेरे साथ गये। हमने कहा कि बताओ, आप अकेली पार्टी बना सकते हो, गौरमेंट को हरा सकते हो क्या ? कांग्रेस को हरा सकते हो ? सब ने माना नहीं।

जनसंघ के दोस्तों से हमने कहा, लेकिन उन्होंने कहा कि बालासाहब बहुत व्यस्त हैं। तो मैंने उन्हें चिट्ठी लिखी। तो उन्होंने कहा मैं 17–18 अटूबर को मैं कानपुर में रहूंगा। उन दिनों मैं लखनऊ में रहता था। मेरी राय यह थी कि बिना एक पार्टी बनाये ये जनतंत्र कामयाब होने वाला नहीं है। मुझसे सहमत थे। मुझसे बोले कि जनसंघ के लीडर क्या कहते हैं ? मैंने कहा, यार मुझसे क्या कहते हैं ? जनसंघ के लीडर वही कहते हैं जो आप कहेंगे। वो बोले नहीं, नहीं ये बात नहीं है, मैंने कहा न सही। मैं उनसे मिला था और उन्होंने ये कहा था कि आपसे बात कर लें। उन्होंने कहा कि मेरा महाराष्ट्र में आजकल प्रोग्राम है। मैं एक महीने के बाद आपको चिट्ठी लिखूंगा, उनसे बात करता हूं। वो चिट्ठी कभी आयी नहीं मेरे पास। कभी नहीं आई। ये बड़े लीडर का हाल है।

मोरारजी के पास मैं और मेरे साथी तीन बार गये। हमने कहा पार्टी का नाम कुछ रखिए, झंडा कुछ रखिए, निशान कुछ रखिए और लीडर खुद हो जाइए। मैंने कहा कि आप मुझसे उम्र में बड़े हैं, आप कांग्रेस में रहे, आप लीडर हो जाएं। लेकिन मेरी एक शर्त है कि अब तक जितनी समझ और रूतबा था कि हमने दूसरे देशों की नकल की है, उससे देश को फायदा नहीं हुआ। महात्मा गांधी का प्रोग्राम मेरी पार्टी का प्रोग्राम स्वीकार करें, बस इतनी मेरी शर्त है। तो वो बोले, ये जो हमारा जंतर–मंतर है, इसका क्या होगा ? मैंने कहा, ये क्या बात हुई मेरी समझ में नहीं आया। वो बोले, अगर मैं कांग्रेस दल छोड़कर अन्य किसी पार्टी में चला गया, तो जंतर–मंतर का दफ्तर इंदिरा के पास चला जाएगा। मैंने कहा, क्या कह रहे हो मोराजी भाई, पार्टी एक हो जाएगी, तो सारा हितंदुस्तान आपका हो जाएगा, जंतर–मंतर तो पीछे है।

दूसरी बार उनके पास गया। मैंने सोचा भई, इस आदमी को समझाना बहुत मुश्किल है। लेकिन एक बार फिर कोशिश की जाए। ये थी 18 अक्टूबर की बात। हमने फोन किया, तो हमसे क्या कहते हैं कि हमारी तीन जगह गुजरात, कर्नाटक और तमिलनाडु, इनका क्या

होगा? अगर मैं आपके पास एक नई पार्टी में शामिल हो जाऊं ? वो बोले कोई फायदा नहीं, नई पार्टी बनाने में, क्योंकि इंदिरा 6 महीने के बाद रहने वाली नहीं है। किसी पंडित से पूछ लिया होगा उन्होंने। मैंने 6 महीने इंतजार कर लिया, 18 अक्टूबर से 22 अप्रैल भी हो गई।

इतना ही नहीं, मैं आपको बताता हूं कि मैंने जय प्रकाश नारायण जी को 22 नवम्बर को कहा कि तीनों पार्टी छोटी–छोटी आपका सहारा ले रही हैं, एक कांग्रेस संगठन और जनसंघ, जनसंघ के आर0एस0एस0 के वर्कर्स बहुत अच्छे हैं, अनुशासित हैं। मैं उनके खिलाफ इलेक्शन लड़ता था, लेकिन कभी उनके खिलाफ एक शब्द नहीं कहा। कभी एक शब्द नहीं कहा।

सोशलिस्ट पार्टी के लीडर राजनारायण जी से दिल्ली में बात हुई कि महाराज, आप इन तीनों पार्टियों को भूल जाइए, लीडरशिप आप संभालिये। मेरा– आपका क्या मुकाबला, मैं इस्तीफा दिये देता हूं। नहीं हुए राजी। पार्टी एक बनी और हमारी जीत हुई। ये जो एजीटेशन की बात करते हैं। राजसत्ता का हस्तांतरण बैलेट से होता है, वोट से होता है, एजीटेशन से नहीं होता। फिर मैंने उनसे कहा कि एजीटेशन की जरूरत नहीं पड़ेगी, अगर हम एक पार्टी बनाने में सहायक हो जाएं,तो, मेरा मिशन खत्म हो जाएगा।

एमरजेंसी लगी। 22 जून को हमने जो भारतीय लोकदल नया बनाया था। मैंने कहा कि आप बड़ी गलती कर रहे हैं। एक पार्टी बनाओ, अगर देश को जिंदा रखना है, नहीं माने। कुछ दिन बाद एमरजेंसी लगी और हम सब लोग जेल के अंदर पहुंच गए। वहां जब हम जेल में पड़े हुए थे– तिहाड़ में थे, हमारे जनसंघ के दोस्त थे नानाजी, उन्होंने कहा कि जेल से निकलने के बाद एक पार्टी बनाएंगे। लेकिन हमारे मोरारजी भाई राजी नहीं हुए। क्यों नहीं राजी हुए ? इतने जिद्दी आदमी हैं, जिसकी कोई सीमा नहीं। जितनी अकड़ उतने ही ज्यादा जिद्दी। 18 जनवरी को गौरमेंट ने छोड़ दिया। इलेक्शन का एनांउसमेंट कर दिया और एमरजेंसी हटा दी।

तो मुझे लखनऊ में बुलाया गया। मैं लखनऊ गया और मुझे कहा गया कि मुझे चेयरमैन बना दिया जाए। जो आदमी आज तक पार्टी बनाने के खिलाफ था, उनको आज चेयरमैन बनाकर क्या होगा, जरा सोचो। उनका दिमांग ही कुछ और है! लेकिन मेरी डिसक्वालिफिकेशन थी, मैं कहना नहीं चाहता हूं। जो कि 14 नवम्बर को पटना में जनसंघ के और सोशलिस्ट पार्टी के लीडरों ने और जो हमारी तरफ से गए थे भानुप्रताप सिंह जी भारतीय लोकदल की तरफ से, हमने ये तय किया था कि जनता पार्टी का जो नुमाइंदा होगा, उसका दल (बी0एल0डी0) का, वह लीडर बना पार्टी का। शर्म की बात जो यह हुई, ये शासन भी कैसा है ?

तो मोरारजी को चुना गया। इलेक्शन की तैयारी हुई। उत्तर भारत मेरे सुपुर्द हुआ। इलेक्शन लड़ाने के लिए और दक्षिण उनके सुपुर्द हुआ, सारा दक्षिण और महाराष्ट्र–गुजरात। गुजरात से 15 सीट आयीं, महाराष्ट्र से 27 या 28, आंध्र से एक, कर्नाटक से एक, तमिलनाडु से एक। हमारे साथियों ने मजबूती से काम किया– उत्तर भारत में आपको मालूम है कि हमने अमृतसर से कलकत्ते तक सब जगह कांग्रेस को साफ कर दिया था।

आज मेरे दोस्त लोग शोर मचा रहे हैं। जब मैं मई–जून के महीने में यहां आया था, कांग्रेस के जिताने के लिए कितनी बड़ी सभा हुई थी। सरकार ने कहा आपको कि वो आए हैं जनसंघ को कम करने के लिए। मेरे दिमाग के अन्दर ना जनसंघ था, ना बी0एल0डी0 थी।

ना मेरे दिमाग में सोशलिस्ट पार्टी थी, ना कांग्रेस थी। मैं ईमानदारी से चाहता था कि एक नई पार्टी बने। वरना मैं मेरे हाथ जिसके सुपुर्द कर दिया जाए। ये बता दिया मध्य प्रदेश ने आंख मींच के वोट दें। ऐसा ही एक मुकाबला राजस्थान में उसके सुपुर्द दे दिया। और वे लोग सोचते हैं हमारी पार्टी में, धीरे–धीरे जनता में भटकाव होगा। जनसंघ के लोग सोचते हैं कि हम राजस्थान के मालिक हैं, मध्य प्रदेश के मालिक हैं। नहीं, मालिक कोई पार्टी नहीं है। ये जनता तय करेगी कि कौन मालिक है और कौन नहीं।

20 मार्च को मैं बीमार पड़ गया। 21 मार्च को मुझे अस्पताल में दाखिल होना पड़ा। मेरे पास अटलजी आते हैं। उन्होंने कहा कि प्राइम मिनिस्टर किसे बनाया जाए ? मैंने कहा मैंने तो खास बात सोची नहीं, मैं तो बीमार पड़ा हुआ हूं। उन्होंने जगजीवनराम जी का नाम सुझाया। मैंने कहा क्यों, क्या इसलिए कि उन्होंने इमरजेंसी लागू करने का प्रस्ताव पेश किया था। इसलिए इनाम देना चाहते हो क्या ? मैं उनके प्राइवेट जीवन के बारे में कहना नहीं चाहता हूं आपसे। अगर कोई मेरी राय में है, ग्वालियर के दोस्तों, तो जमीन के दो टुकड़े नहीं होंगे। जीवन दो हिस्सों में बॅटा हुआ नहीं है– एक प्राइवेट, एक पब्लिक। जो आदमी अपने प्राइवेट जीवन में ईमानदार नहीं होगा, जो अपने साथियों को धोखा देता होगा, जो हाथ का सच्चा नहीं होगा प्राइवेट जीवन में, वो पब्लिक जीवन में प्राइम मिनिस्टर या चीफ मिनिस्टर बनने के बाद भी चरित्रवान नहीं होगा और देश को आगे नहीं ले जा पाएगा दोस्तों।

हमारे नौजवानों के सामने कौन आइडियल–हैं, यह खुद समझना है। नई पीढ़ी के लोगों को। मैंने हाईस्कूल पास किया था और आगरा कालेज में पढ़ने के लिए चला गया था। तो, मैं आपसे कहना चहाता हूं कि इस समय नई पीढ़ी के जितने भी हम लोग थे उनके पास महापुरुषों के वृतांत मौजूद थे। स्वामी रामतीर्थ, स्वामी विवेकानन्द। इनका जीवन–दर्शन हम पढ़ते थे। उनकी पुस्तकें पढ़ते थे। इसका हम लोगों पर अच्छा असर पड़ता था। राजनैतिक और सार्वजनिक जीवन में महात्मा गांधी ने चार्ज ले लिया। सन् 1918–19 में ये लोग हमारे सामने थे लोकमान्य लितक, पं0 मालवीय, लाला लाजपतराय, ऐसे दिग्गज लोग हमारे आदर्श थे।

आज के नौजवान किसको आदर्श मानें ? कौन आदमी है ? कौन रहेगा, इस देश के अन्दर। इस देश में आइडियलिज्म ही ना रहा तो ये देश तरक्की नहीं कर सकता। हमारी बहू–बेटियां इंदिरा से कुछ सीख सकती हैं क्या ? हमारे नौजवान जगजीवन राम से कुछ सीखते हैं ? या मोरारजी से सीख सकते हैं या अटलजी से कुछ सीख सकते हैं ? नहीं, कुछ नहीं सीख सकते। बहुगुणा या चन्द्रशेखर से सीख सकते हैं, नहीं, सीख सकते हैं कुछ नहीं सीख सकते हैं। फिर आज उनके सामने कौन से आदर्श हैं ? उनके सामने जो मौजूद हैं, उनके घरों के बच्चों पर भी असर पड़ा है, वो देश को क्या चलाएंगे ?

अटलजी से मैंने कहा कि हरगिज, हरगिज तीसरे आदमी को प्राइम मिनिस्टर मानने को तैयार नहीं हूं। जो इलेक्शन होने के बाद कांग्रेस छोड़कर आया और जनता पार्टी में शामिल नहीं हुआ। मैंने कहा था– शामिल हो जाओ, वो इसलिए आया था कि वह प्राइम मिनिस्टर हो जायेगा। जिसने इमरजेंसी का रिजर्वेशन पोस्ट किया था। मैंने अटलजी से पूछा कि जरा बतलाइये, अगर उन्हें प्राइम मिनिस्टर बनाया, तो जो 150 आदमी कांग्रेस से आये हैं दूसर पार्टी से कामयाब होकर आये हैं, अगर आपने इस वक्त आलोचना की इमरजेंसी की, तो कांग्रेस वाले पूंछेंगे, आपका मुंह कहां है? जिस आदमी ने इमरजेंसी का रेजोजल्यूशन पोस्ट

किया था, वह आपका प्राइम मिनिस्टर है। अटल जी चुप हो गये। मैंने कहा, 25 साल से आप जनसंघ में हो। हिन्दू संस्कृति की बातें करते हो। हिन्दू संस्कृति में ऐसा लीडर चलेगा तो देश किधर जाएगा ?

मैं जानता हूं कि गरीब आदमी के लिए मोरार जी के दिल में कोई जगह नहीं है। मेरे विचार उनसे मिलने वाले नहीं है, लेकिन 19 महीने जेलखाने में रहा और जगजीवनराम ने जेलखाने भेजने का प्रस्ताव पेश किया। फिर वह मुझसे सात साल बड़े हैं तो मैं उनको पसंद करूंगा। तो मैंने जयप्रकाश जी को चिट्ठी लिखी 14 तरीख को, अस्पताल से, बीमारी की शैया से कि मैं और मेरे साथी चाहते हैं मोरारजी को प्राइम मिनिस्टर बना दिया जाय। इस तरह वह प्राइम मिनिस्टर बन गए। प्राइम मिनिस्टर बनते ही हमें भूल गये।

जगजीवनराम को जब प्राइम मिनिस्टर नहीं बनने दिया गया तो उन्होंने कहा कि मैं हरिजनों का दुश्मन हूं। मैंने जितना हरिजनों के लिए किया, मिनिस्टर और चीफ मिनिस्टर होने के बाद कर सकता हूं, उतना हिंदुस्तान के किसी मिनिस्टर नहीं किया।

खैर, अब बात हैं मेरे जन्मदिन की। मेरे साथी नहीं माने। मैंने कहा कि दिल्ली के लोग मुझसे नाराज होंगे, गलतफहमी हो जाएगी, गरीब आएंगे, किसान आएंगे, लाखों की तादात में और गलतफहमी हो जाएगी लोगों के दिलों में। नहीं माने। मोरारजी को बुलाया गया पहले, लेकिन जब 25 लाख की भीड़ देखी तो नाराज हो गये। उन्होंने मुझे यह तक नहीं कहा कि तुम 76 साल के हो गये हो, भगवान तुम्हारी आयु बढ़ाए। नहीं। हरगिज नहीं। उल्टे सांप उनके दिल पर लोट गया कि यह आदमी इतना लोकप्रिय है। कुछ करना चाहिए इसका इलाज। एक गलती मुझसे हुई जो मैंने उनको चिट्ठी लिखी कि आप बिहार में यह बयान देकर आये हैं कि मेरे लड़के के खिलाफ कोई शिकायत अखबारों में निकलता था और मैं कमीशन बैठाने को तैयार हूं। सार्वजनिक जीवन में आदमी को ही ईमानदार होना जरूरी नहीं है, जनता को भी ईमानदार होना चाहिए। मैंने कहा, कमीशन बैठाइये। तो बोले कि मेरा एक ही बेटा है, अगर उसके खिलाफ शिकायतें हैं, तो आपके खिलाफ भी हैं। शिकायतें तो होती रहती हैं। शिकायतों का क्या करें। मेरे पास तो तुम्हारी स्त्री के खिलाफ भी शिकायत है। इस पर मैंने उनको एकदम चिट्ठी लिखी कि मेरी वाइफ के खिलाफ कमीशन बैठाइये, मैं आपको रिक्वेस्ट करता हूं, कमीशन बैठाइये। मैंने उनको लिखा कि मेरी पब्लिक और प्राइवेट लाइफ एक है, दो नहीं हैं। मेरी लाइफ एक खुली किताब है, जो चाहे पढ़ सकता है। आप करा लीजिए जॉच। हिम्मत नहीं थी बैठाने की। लेकिन नाराज हो चुके थे।

फरवरी 78 में मेरे पास चिट्ठी आती है बाम्बे से कि जनसंघ के लोगों ने और मोरारजी ने तय कर लिया है मुझे मिनिस्टरी से हटाने का। अगर मझे मिनिस्टरी से नहीं हटायेंगे तो हम खुद हट जायेंगे। मेरे डाक्टर ने कहा कि आप खतरे से बाहर हैं, आप सूरजकुंड के पास एक रेस्ट–हाउस है, उसमें ठहरिये। एक डाक्टर और एक नर्स 24 घंटे मेरे पास बैठे। जब मैं जून 78 में वापस आया वहां से, तो अखबार वाले पूछते हैं कि इंदिरा के खिलाफ आप क्या करेंगे ? मालूम नहीं अदालतों में मुकदमें चलेंगे, मालूम नहीं, कानून कौनसा क्या कोई विशेष प्रोसिजर है, कुछ विशेष अदालतें होंगी। मैंने कहा नहीं, जनता की अदालतें चलेंगी। फिर मालूम हुआ, मोरारजी भाई का इंदिराजी से समझौता हो गया है। इसलिए मामूली अदालतों में दस साल लगेंगे। हिन्दू अखबार है, मुझे याद है मद्रास का, जिसमें वह छपा था।

16 जून को मैंने सूरजकुंड में होम सेक्रेटरी को बुलाकर कहा था कि केस रजिस्टर करो। होम मिनिस्टरी का मामला था, मेरा मामला था। मैं अभी जिंदा था तो इनको कोई अधिकार नहीं था बावूद प्राइम मिनिस्टर होने के। उन्होंने कहा कि हम स्पेशल केस नहीं रजिस्टर करेंगे। उन्हें मुझसे पूछना चाहिए था। अगर उनकी नाक कटती है मेरे पास आने से तो कमीशन बैठाकर पूछ सकते थे। लेकिन जब यह बयान दो बार, तीन बार दोहराया तो मैंने कहा कि जी, मुझसे गलती हुई। आज इंदिरा खुद कहती है कि आज हिम्मत नहीं जनता पार्टी में गिरफ्तार करने की। जनता समझती है कि गौरमेंट नपुंसक लोगों की है। (मिसिंग)। लेकिन एक बहाना था और बाद में आपने देखा कि कोर्ट में उनके साहबजादे के खिलाफ केस चल रहे हैं। अगर शराफत होती तो आदमी यह कहता कि चरण सिंह, मेरी गलती थी, तुमसे माफी चाहता हूं। मैंने तुमसे इस्तीफा मांगा था, अब मैं तुमसे रिक्वेस्ट करता हूं, तुम वापस आ जाओ, तो मैं मान जाता। लेकिन इतनी शराफत कहां ?

यही नहीं, बिहार का एक आदमी मुझ पर कातिलाना हमला करता है 24 दिसम्बर सन् 78 को। पुलिस उसको गिरफ्तार करती है। जगजीवनराम जी या मोरारजी का आदमी है। मेरा उससे कोई ताल्लुक नहीं था, कोई दुश्मनी नहीं थी। वो लड़का पागल नहीं है, वो समझदार है। पढ़ा–लिखा है, बी0ए0 में पढ़ रहा है। बी0ए0 पास कर चुका है। फर्स्ट क्लास आया था शायद हाईस्कूल में। मैंने अखबार वालों से कहा कि इसके खिलाफ नहीं लिखना, क्योंकि इससे बात और आगे बढ़ेगी। लेकिन मैं यह कहना चाहता हूं कि मामूली शिष्टाचार भी नहीं रहा मोराराजी को कि मुझे फोन पर यह कह सकते कि चरण सिंह, मुझे खुशी हुई कि तुम बच गये, मुझे खुशी हुई। नो, एक छोटे दिल का आदमी था, जिसे मैंने गलती से बनवा दिया था प्राइम मिनिस्टर।

खैर, मुझको निकाला, राजनारायण को निकाला। राजनारायण को वर्किंग कमेटी से निकाला। हमारे चीफ मिनिस्टरों को निकाला। गरीब लोगों के घर जो पैदा हुए थे, कर्पूरी ठाकुर बिहार का चीफ मिनिस्टर, एक नाई का लड़का है, कितना त्यागी और कितना ईमानदार आदमी है, यह इससे साबित होगा कि इसका बाप आज भी गांव में नाई का काम करता है, बावजूद बेटे के चीफ मिनिस्टर होने के। रामनरेश यादव को निकाला। छोटी–सी बिरादरी का आदमी है। देवीलाल को निकाला। राजनारायण को वर्किंग कमेटी से निकाला। मैंने समझा, यह बात ठीक है, क्योंकि राजनारायण कभी–कभी संयम छोड़ देते, ज्यादा बात कह देते। मैंने कहा कि राजनारायणजी, आपको ऐसा नहीं करना चाहिए, हमको पार्टी के अन्दर रह कर लड़ना है। लेकिन उनके खिलाफ जो कार्यवाही की गयी थी, वो ईमानदारी भी नहीं थी।

मैं चाहता हूं, आप मेरी बात सुनने के बाद चुपचाप बैठ जाएंगे। हमने उन्हें मिनिस्टर भी बनवाया, चेयरमैंन भी बनवाया, प्राइम मिनिटर भी बनाया। लेकिन जब ना–काबिले–बर्दाश्त हो गया तो हम पार्टी छोड़ने के लिए मजबूर हो गए। अब जो पार्टी की तरफ से विधेयक पेश हुआ, मई 79 में, उसमें लिखा था कि चौथाई से कम आदमी पार्टी छोड़ जाएं तो डिफेक्शन होगा और चौथाई या चौथाई से ज्यादा आदमी छोड़ेंगे तो पार्टी का विभाजन होगा। हमने ठीक एक–तिहाई आदमियों ने पार्टी छोड़ी थी। बेईमान हैं वो लोग जो हमें डिफेक्टर कहते हैं। मजबूर हैं। हमने पार्टी बनाई थी। इस पार्टी का एक–एक सदस्य जानता है कि ये पार्टी बनाने के खिलाफ थे। तो यह मैंने पार्टी की बात बताई।

अब मैंने आपका बहुत समय लिया, मुझे अब देहली जाना है। तो मैं आपको धन्यवाद देता हूं बावजूद कुछ लोगों के शोर मचाने के, आपने तसल्ली से मेरी बात सुनी। बस एक ही बात कहना चाहता हूं, हम गांवों को उठाना चाहते हैं, जहां असली हिंदुस्तान रहता है। गांव में हाईस्कूल और कॉलेज बनाकर शहर के बड़े–बड़े स्कूल–कॉलेजों के लड़कों का मुकाबला नहीं कर सकते हैं ना अस्पताल मौजूद हैं, ना सड़कें मौजूद हैं, ना बिजली मौजूद है। गांव और शहर शहर के बीच एक और साढ़े तीन का फर्क है आमदनी का। हमारी बहू–बेटियों के लिए गांव में शौचालय भी नहीं हैं। विचार करो, सड़कों पर देखा हमने सब को। मैं खुद एक किसान के, काश्तकार के घर में पैदा हुआ हूं। मैंने अपनी माताजी को भी देखा, अपनी बहनों को भी देखा है, सब जाती हैं रात के समय। दिन में जा नहीं सकतीं बाहर। हमने सड़कों पर देखा है अपनी बहू–बेटियों को गांव में। शर्म आनी चाहिए। पुरूष तो अन्दर जा सकते हैं, जंगलों में खेतों में लेकिन लड़कियों के लिए, बहू–बेटियों के लिए शौचालय बनाये जाने चाहिए। पहली सुविधा हमारे लिए ये है, क्योंकि दोस्तों, ये तो आप देखें, वोट आप देते हैं, ये लीडरशिप उनके हाथ में रहती है जो बड़े घरों मे पैदा हुए हैं। सत्ता अभी तक उन्हीं लोगों के हाथ में रही है, जिनकी बहू–बेटियों के लिए फ्लश हैं, उन्हें बाहर जाने की जरूरत नहीं पड़ती है।

हम ये सारे नक्शे को बदलना चाहते हैं। हम गांवों को पूरा दुरुस्त करना चाहते हैं। हमारे यहां गोबर जलाया जाता है, जिसे परमात्मा ने खेत में डालने के लिए पैदा किया था, उससे ईंधन का काम लिया जाता है। और इस गोबर से हमारी बहू–बेटियों की आंखें खराब हो जाती हैं, उनके फेफड़े खराब हो जाते हैं और देखते–देखते उनका सौंदर्य पांच साल में खत्म हो जाता है। अगर हमारी शक्ति चली, हमें मौका मिला, हमको वोट मिला, और आप लोगों का सपोर्ट मिला, तो हम अपनी बहू–बेटियों के लिए परमानेंट लैट्रीन बनवाना चाहते हैं और सारे नक्शे को बदलना चाहते हैं, क्योंकि महात्मा ने बताया था कि असली भारत गांव में रहता है, शहर या ग्वालियर में नहीं रहता।

ये जो शोर मचा रहे हैं, हमने एक अध्यादेश जारी किया, शहर के बड़े–बड़े दुकानदारों और जमाखोरों के खिलाफ, भाव बढ़ने से रोकने के लिए, बेईमान दुकानदारों के खिलाफ तो इस अध्यादेश की मुखालफत की गई थी, ये बेईमानों के साथ मिल गये। अटलबिहारी वाजपेयी कहते हैं कि अध्यादेश नहीं लाना चाहिए था। मैं इसके खिलाफ 'सत्याग्रह' करूंगा। क्यों ? डा0 जोशी जी ने, भिवानी में, इलेक्ट्रिक वर्कर्स को दूर करने के लिए अध्यादेश जारी किया था तब उन्होंने इसकी मुखालफत क्यों नहीं की थी। मार्च, 78 में जिसका मैंने समर्थन किया था लोकसभा में गृहमंत्री के पद पर, तब नहीं की, क्यों नहीं की थी? और अब हम–तुम उन बेईमान दुकानदरों को जो जमाखोरी करते हैं, मुनाफा दुगना कमाते हैं, दाम ज्यादा लेते हैं गरीब लोगों से, उनके लिए अध्यादेश जारी किया गया, तो इसकी मुखालफत करते हैं, ये इनके लीडर हैं, इनके लीडर हैं।

इन शब्दों के साथ दोस्तों, मैं अपना कथन समाप्त करता हूं और मैं यह चाहता हूं कि हमारी पार्टी को ज्यादा से ज्यादा वोंट दें और साथ तीन नारे लगा दें–

भारत माता की जय, भारत माता की जय।

महात्मा गांधी की जय, महात्मा गांधी की जय।।

लोकदल–कांग्रेस की जय, लोकदल कांग्रेस की जय।। ––––––